वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 209 | सोमवार 27 नवम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर पहुंचीं वसुंधरा

गहलोत ने नजदीकी नेताओं से फीडबैक लिया; वोटिंग के बाद प्रत्याशियों ने किया आराम, परिवार के साथ बिताया समय

जयपुर. कासं

राजस्थान में मतदान के अगले दिन यानी रविवार को कई प्रत्याशी आराम के मूड में नजर आए। उन्होंने परिवार के साथ समय बिताया। कुछ उम्मीदवार लोगों से फीडबैक लेने पहुंचे तो किसी ने कार्यकर्ताओं से बातचीत की। सीएम अशोक गहलोत का आज कोई सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं था। सीएम ने रविवार को जयपुर में नजदीकी नेताओं से फीडबैक लिया। पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट सुबह ही जयपुर से दिल्ली चले गए। वे अगले कुछ दिन दिल्ली में रहेंगे। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे रविवार को बांसवाड़ा पहुंचीं। हेलीपैड से वसुंधरा कार से सीधे त्रिपुरा सुंदरी मंदिर पहुंचीं। करीब 30 मिनट पूजा-अर्चना की। पार्टी प्रत्याशी धनसिंह रावत, जिलाध्यक्ष लाभचंद पटेल सहित कई पदाधिकारी भी उनके साथ थे।

घूमने निकले धारीवाल

कोटा उत्तर से कांग्रेस प्रत्याशी शांति धारीवाल आज सुबह कुछ समय परिवार के साथ बैठे और नाश्ता किया। इसके बाद अपने निवास पर कार्यकर्ताओं से मिले। कार्यकर्ताओं से मिलने के बाद वे कार से घूमने निकल गए।

पुष्पेंद्र भारद्वाज ने परिवार के साथ बिताया समय

सांगानेर से कांग्रेस प्रत्याशी पुष्पेंद्र भारद्वाज आज सुबह जल्दी घर से नहीं निकले। वे आराम से उठे और परिवार के साथ चाय पी। पत्नी और बच्चों के संग समय बिताया। उसके बाद घर आए कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा की। भारद्वाज ने कहा- मेरा चुनाव आम जनता का चुनाव रहा। सांगानेर बीजेपी की ट्रेडिशनल सीट मानी जाती है, लेकिन इस बार उनको भी पसीना आ गया। हमने पूरे 5 साल जनता के बीच रहकर उनकी सेवा की। कोरोना काल में भी परिवार की चिंता किए बिना लोगों के बीच रहे। मुझे पूरा विश्वास है कि इसका फायदा चुनाव परिणाम में देखने को मिलेगा।

जयपुर के मंदिरों में पहुंचे बालमुकुंद

हवामहल से बीजेपी प्रत्याशी महंत बालमुकुंद आचार्य ने कहा- मैं हमेशा अपने रूटीन से उठा। हमेशा की तरह सुबह ढाई घंटे पूजा-अर्चना की। गोविंद देवजी, ताड़केश्वर मंदिर जाकर दर्शन किए। उसके बाद चारदीवारी के खंडित मंदिर जाकर भगवान को प्रणाम किया। उन्होंने कहा- हम इन मंदिरों में फिर भगवान की प्राण प्रतिष्ठा करवाएंगे। बालमुकुंद ने कहा- चुनावों के चलते ऑफिस में बैठने का समय कम मिलता था। आज फुर्सत का समय था तो ऑफिस में बैठकर कार्यकर्ताओं से आराम से चुनावी चर्चा की। उन्होंने हवामहल सहित जयपुर की सभी 8 सीटों पर बीजेपी की जीत का दावा भी किया।

आरआर तिवाड़ी ने पोता-पोती के साथ खेला शतरंज

हवामहल विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी आरआर तिवाड़ी आज मतदान की थकान मिटाने के लिए देरी से उठे। घर में पोता-पोती के साथ शतरंज खेला। उसके बाद ठाकुर जी के मंदिर में जाकर दर्शन किए। उन्होंने कहा- सार्वजनिक जीवन में कोई आराम नहीं होता है। चुनाव के कारण थकान थी, इसलिए आज सुबह 11 बजे उठा। चुनावी भागदौड़ में देर से सोना और जल्दी उठने का क्रम पिछले एक महीने से जारी था। वोटिंग के बाद अब सुकून महसूस कर रहा हूं। उन्होंने वोटिंग प्रतिशत बढ़ने को लेकर कहा कि यह वोटिंग प्रतिशत कांग्रेस सरकार की चुनावी गारंटी का परिणाम है।

श्रीनेमिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ

बैंड बाजे के साथ घटयात्रा निकाली

प्रकाश पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। श्रुत संवेगी मुनिश्री आदित्य सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में न्यू हाउसिंग बोर्ड शास्त्री नगर शौर्यपुर नगर में श्री माज्जिनेंद्र श्रीनेमिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व मैत्री महायज्ञ बड़े उत्साह पूर्वक 26 नवंबर रविवार को प्रारंभ हुआ। समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि प्रातः सुपार्श्वनाथनाथ दिगंबर जैन मंदिर से बैंड बाजा के साथ घटयात्रा निकाली। महिलाएं सिर पर मंगल कलश लिए चल रही थी जो पंचकल्याणक स्थल पर पहुंची। जहां मुनि ससंघ के सानिध्य में त्रिलोक चंद,सौरभ छाबड़ा परिवार ने प्रतिष्ठाचार्य अरविंद कुमार, पंडित पीयूष भैया जैन, पं पदमचंद काला के निर्देशन में विधि-विधान पूरक ध्वजारोहण कर मंडप का उद्घाटन किया। जय कारों से सारा वातावरण गूंज उठा। मुनिश्री आदित्य सागर जी महाराज ने धर्म देशना में कहा कि माता त्रिशला के 15 महीने नेमिनाथ भगवान गर्भ में आए। तो आंगन में रत्नो की वृष्टि हुई। उन्होंने कहा कि पहले के लोगों में भविष्य की सोच होती थी। मुनिश्री ने कहा कि जिनबिम्ब पंचकल्याणक में चेतना के संस्कार दिए जाएंगे। सभी इंद्र-इंद्राणियां पंचकल्याणक की सभी क्रियाएं देखकर अपने भावों को सुधारने का प्रयत्न करें। इसमें अपना कल्याण होगा। संसार के भ्रमण को घटाने के लिए घटयात्रा निकाली जाती है। ध्वजारोहण जिन शासन का ध्वजारोहण किया गया। मुनि श्री ने कहा कि जितना अधिक परिश्रम- पुरुषार्थ करेंगे उतनी लक्ष्मी बढ़ेगी, जितना बड़ा दान करेंगे उतनी कीर्ति बढ़ेगी। आहार दान, जिन बिम्बस्थापना आदि दान में आती है। अभ्यास करने से विद्या बढ़ती है। बुद्धि कर्म के आधार पर बढ़ती, घटती है। मुनिश्री ने कहा कि जिसके पास सरस्वती है उसकी आगे दुनिया झुकती है। 2024 तक भारत देश में बड़ा परिवर्तन आने की संभावना व्यक्ति की। प्रवचन के बाद इंद्र प्रतिष्ठा, मंडप प्रतिष्ठा, वेदि प्रतिष्ठा, जाप्यानुष्ठान, अंकुरारोपण। मध्यान में 3:30 बजे बड़े भक्ति- भाव से माता की गोद भराई की गई। माता के परिवारजन एवं इंद्र इंद्राणिया व समाजजनों ने माता की गोद भराई की। सायंकाल 6:30 बजे श्रीजी की आरती, शास्त्र सभा, भेरीताडप, शोधर्म सभा का भव्य आयोजित कि गई।

विदाई के क्षणों में उमड़ा भावनाओं का सागर, गीतों व विचारों के माध्यम से जताएं मन के जज्बात

रूप रजत विहार में चातुर्मासिक विदाई समारोह का आयोजन, श्रेष्ठ सेवाएं देने वालों का सम्मान

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। पांच माह के सफलतम चातुर्मास में विदाई की बेला की नजदीक आने पर श्रावक-श्राविकाओं के मन के जज्बात गीतों व विचारों के माध्यम से सामने आए। गुरूणी मैया से चातुर्मास समाप्ति के बाद भी आशीर्वाद बनाए रखने और जल्द फिर भीलवाड़ा की धरा को पावन करने की विनती की गई। चातुर्मास में गुरूणी मैया से जिनशासन की आराधना व ज्ञान की जो बाते सीखने को मिली उसके प्रति भी काव्य रचनाओं व विचारों के माध्यम से आभार जताते हुए संकल्प दशार्या गया कि उन सीखी हुई बातों को जीवन में उतारने का पूरा प्रयास करेंगे। पूरा माहौल श्रद्धा व भावनाओं से ओतप्रोत था। ये नजारा भीलवाड़ा के चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में रविवार को मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या वात्सल्यमूर्ति महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में चौमासी पक्खी पर श्रीसंघ की ओर से आयोजित चातुर्मासिक विदाई समारोह में दिखा। समारोह में श्रावक-श्राविकाओं ने मन के भाव व्यक्त करते हुए इस बात पर खुशी जताई कि रूप रजत विहार में पहले ही चातुर्मास ने सफलता का नया इतिहास रच दिया ओर क्षेत्र में धर्म प्रभावना व जिनशासन की भक्ति की ऐसी अलख जगाई की उसका प्रभाव चातुर्मास समाप्ति के बाद भी बना रहेगा। समारोह में आगम मर्मज्ञा डॉ. चेतनाश्रीजी म.सा. ने कहा कि चन्द्रशेखर आजादनगर निवासियों सहित पूरे भीलवाड़ावासियों की गुरू भक्ति व जिनशासन सेवा की भावना की जितनी अनुमोदना की जाए कम है। चातुर्मास के पांच माह का समय धर्म प्रभावना में समर्पित रहा। हमने जिनशासन की आराधना के लिए जो भी भावना जताई उसे श्रीसंघ व बहनों ने पूरा करने में कोई कमी नहीं रखी। इस चातुर्मास में मैने माला के प्रभाव के बारे में प्रवचन के माध्यम से बात रखने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि श्रीसंघ ने इस चातुर्मास को यादगार व अविस्मरणीय बनाने में कोई कमी नहीं रखी। संघ का क्षेत्र भले छोटा लेकिन मन बहुत बड़ा होने से हर कार्य असीम सफलता प्राप्त करता गया। आदर्श सेवाभावी दीप्तिप्रभाजी म.सा. एवं तरूण तपस्वी हिरलप्रभाजी म.सा.ने भी गीतों व विचारों के माध्यम से मन की भावनाएं व्यक्त करते हुए भीलवाड़ावासियों की भक्ति भावना की खूब सराहना करते हुए मंगलभावनाएं व्यक्त की। धर्मसभा में आगम रोचक व्याख्यानी डॉ. दर्शनप्रभाजी म.सा.,तत्वचिंतिका डॉ. समीक्षाप्रभाजी म.सा., आदि ठाणा का सानिध्य भी रहा। श्री अरिहन्त विकास समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र सुकलेचा ने चातुर्मास की एतिहसिक सफलता का श्रेय पूज्य महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा की मंगलमय जिनवाणी को देते हुए कहा कि उनके आशीर्वाद से ही हम प्रथम चातुर्मास में ही धर्म प्रभावना का कीर्तिमान बना पाए। उन्होंने कहा कि हमारा संघ भले अपेक्षाकृत छोटा था लेकिन हमारा मन बहुत बड़ा था और श्रीसंघ के सभी सदस्यों ने सामूहिक प्रयास कर गुरूणीवर्या के पावन सानिध्य में इस चातुर्मास को धर्म साधना की दृष्टि से एतिहासिक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। विदाई के इन पलों में भावनाएं बहुत उमड़ रही है लेकिन शब्द नहीं मिल पा रहे है। चातुर्मास के यह पांच माह का समय जिंदगी के अविस्मरणीय पल बन गए है।

चातुर्मास मानसरोवर श्रीसंघ मे बड़े ही हर्षोल्लास, तप-त्याग एवं विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के साथ सम्पन्न

आभार एवं कृतज्ञता दिवस मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान सिंहनी, महाश्रमणी, गुरूमाता महासती श्री पुष्पवती जी म सा, उपप्रवर्तिनी सद्गुरूवर्या डॉ श्री राजमती जी म सा आदि ठाणा 7 का वर्ष 2023 का चातुर्मास मानसरोवर श्रीसंघ मे बडे ही हर्षोल्लास, तप-त्याग एवं विभिन्न धार्मिक क्रियाओ के साथ सम्पन्न हुआ। आज रविवार को मानसरोवर श्री संघ द्वारा महासती मंडल के प्रति कृतज्ञता एवं चातुर्मास मे जिन भी श्रावक-श्राविकाओ की सराहनीय सेवाऐ रही तथा प्रत्येक शुक्रवार को उवसग्गहरं स्तोत्र जाप के लाभार्थियो का श्रीसंघ द्वारा सम्मान किया गया। श्राविका मंडल द्वारा विदाई गीत प्रस्तुत किया। बालिका सुश्री समृद्धि जैन, श्रीमती अनिता मुणोत तथा हेमंत जैन एवं महेन्द्र जैन 'समिधि' ने विदाई गीत/भजन के

माध्यम से महासती मंडल के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किये। श्राविका मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता जैन एवं मंत्री श्रीमती संगीता लोढ़ा ने भी गुरूवर्या श्री जी के प्रति कृतज्ञता भाव व्यक्त किये। संघ मंत्री प्रकाश चंद लोढ़ा ने चातुर्मास मे हुये सभी कार्यक्रमो की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। संघाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार जैन 'राजा' ने इस चातुर्मास को सफल बनाने मे सभी श्रावक-श्राविकाओ का, महिला मंडल, युवा प्रकोष्ठ तथा सभी लाभार्थियो का, गौचरी सेवा, भोजनशाला मे सेवा, प्रतिक्रमण एवं संवर साधना, शिक्षा एवं चिकित्सा सेवा, मंच संचालन एवं प्रवचन व्यवस्था इत्यादि मे सराहनीय सेवाऐ देने वालो का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। महाश्रमणी गुरुमाता महासती श्री पुष्पवती जी म. सा. के 99 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे संघाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार जैन 'राजा' परिवार द्वारा गुरूमाता की हस्त निर्मित फॉटो समर्पित की। इस अवसर पर मानसरोवर श्री संघ द्वारा वर्ष 2023 के चातुर्मास के स्वर्णिम पलो की संस्मरण फोटो पुस्तिका गुरूवर्या श्री जी को समर्पित की गई।

ज्ञानतीर्थ में हो रही है सिद्धों की आराधना

28 नवंबर को महायज्ञ एवम श्रीजी की भव्य शोभायात्रा

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

मुरेना। श्री दिगम्बर जैन ज्ञानतीर्थ क्षेत्र में सिद्धचक्र विधान के तहत आठ दिन से निरंतर श्री सिद्ध परमेष्ठी की आराधना की जा रही है। प्रतिष्ठचार्य अशोक जैन शास्त्री लिधौरा एवम पंडित महेंद्रकुमार शास्त्री मुरेना ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक जैन श्रावक को अपने जीवनकाल में कम से कम एकबार श्री सिद्धचक्र विधान अवश्य करना चाहिए । इस विधान को सर्वप्रथम सती मैनासुंदरी ने कराया था। विधान के पुण्य प्रभाव से मैना सुंदरी के पति श्रीपाल एवम अन्य लोगों का कुष्ठ रोग दूर हुआ था। ज्ञानतीर्थ पर विराजमान सप्तम पट्टाचार्य श्री ज्ञेयसागर महाराज, मुनिश्री ज्ञातसागर महाराज, मुनिश्री नियोगसागर महाराज, क्षुल्लक श्री सहजसागर महाराज के पावन सान्निध्य में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के सातवें दिन 512 अर्घ समर्पित किए गए। आज आठवें दिन श्री सिद्ध परमेष्ठि को 1024 अर्घ समर्पित किए जाएंगे । अंतिम दिन 28 नवंबर को प्रातः विधान के समापन पर विश्व शांति की कामना के साथ विश्व शांति महायज्ञ होगा । श्री जिनेन्द्र प्रभु की भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। श्री जिनेंद्र प्रभु को नालकी में विराजमान कर भ्रमण कराया जाएगा। तत्पश्चात पाण्डुक शिला पर प्रभु को विराजमान कर स्वर्ण कलशों से जलाभिषेक के साथ विधान का समापन होगा। परम पूज्य सराकोद्धारक षष्ट पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के पावन आशीर्वाद से ब्रह्मचारिणी बहिन अनीता दीदी, मंजुला दीदी, ललिता दीदी के निर्देशन में पुण्यार्जक बजाज परिवार बिचपुरी बालों का विधान ज्ञानतीर्थ की पावनधरा पर हुआ है । उक्त विधान में सकल जैन समाज ने पूर्णता के साथ सहभागिता प्रदान करते हुए विधान में भाग लिया। अंतिम दिन कार्यक्रम के पश्चात पुण्यार्जक परिवार की ओर से वात्सल्य भोज की व्यवस्था रखी गई है ।

वेद ज्ञान

छल का नतीजा

चिकनी-चुपड़ी बातों से विश्वास में लेकर किसी से कुछ हासिल कर अपनी बातों से मुकर जाना छल है। इस प्रवृत्ति को ठगी भी कह सकते हैं। ऐसी नकारात्मक प्रवृत्तियों की धर्मग्रंथों और ऋषियों-मुनियों ने कड़ी निंदा की है। जो लोग इन नकारात्मक प्रवृत्तियों से ग्रस्त हैं, उनकी मदद ईश्वरीय-शक्तियां भी नहीं करतीं। ऐसे लोगों के लाख पूजा-पाठ, व्रत-अनुष्ठान करने के बावजूद उन्हें ईश्वर की अनुकंपा नहीं मिलती। दुर्भाग्य का विषय है कि भौतिकता के दौर और शिक्षा के प्रसार के युग में तीन-तिकड़म, झूठ-फरेब और झपट-कपट से कोई उपलब्धि हासिल कर लेने वाले को बुद्धिमान और चतुर इंसान माना जाता है। ऐसे व्यक्ति की निंदा के बजाय स्तुति, सामाजिक बहिष्कार की जगह स्वागत-सम्मान हो रहा है। नतीजा यह है कि इस तरह की प्रवृत्ति हर क्षेत्र में बढ़ रही है। आदर्श वाक्य सत्यमेव जयते पर तमाम लोग अमल नहीं कर रहे हैं। छोटे संस्थानों में ही नहीं, बल्कि बड़े शासकीय संस्थानों में भी सार्वजनिक तौर पर खुद गलत बयानियां की जा रही हैं और इन लोगों के समर्थन में कुछ लोग तालियां भी जोरदार ढंग से बजा रहे हैं। बहरहाल गौर से देखा जाए तो झूठ-फरेब की आयु ज्यादा लंबी नहीं होती, बल्कि झूठ-फरेब करने वाले ठग प्रवृत्ति के लोगों को कुछ समय के बाद इसके घातक परिणाम मिलने लगते हैं। यह केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सच्चाई है। जब कोई छल के बल पर किसी को ठगता है तो उस वक्त उसका मन कुछ डरा-डरा सा हो जाता है। मनुष्य का शरीर रसायनों से भरा है। इस स्थिति में शरीर के रसायनों में नकारात्मक और विषैले परिवर्तन होने लगते हैं जिसका असर कुछ दिनों बाद दिखता है। पौष्टिक आहार, योग और व्यायाम के बावजूद शरीर के रासायनिक परिवर्तन बीमारियों को जन्म देने लगते हैं। यह नकारात्मकता विचारों के जरिये रक्त में प्रवेश कर जाती है। फिर तो झूठ-फरेब बगैर मन उदास-उदास सा रहने लगता है। अब धोखेबाजी आदत बन गई। मनुष्य आदतों का गुलाम होता है। जब कोई पराया शख्स धोखे में नहीं फंसता तो फिर अपने परिवार, रिश्तेदार और आसपास रहने वालों पर वह कपट का जाल फेंकने लगता है। नजदीकी लोग तो सब कुछ जानते रहते हैं। लिहाजा विवाद और झगड़े शुरू होते हैं।

संपादकीय

डीपफेक अर्थात महाझूठ के खिलाफ कानून...

डीपफेक अर्थात महाझूठ के खिलाफ अगर केंद्र सरकार कानून बनाने जा रही है, तो यह स्वागतयोग्य है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने गुरुवार को सोशल मीडिया कंपनियों, एआई कंपनियों और अन्य शोधकताओं के साथ बैठक के बाद यह स्पष्ट कर दिया है कि इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय अगले 10 दिन में डीपफेक से निपटने के लिए एक स्पष्ट, कार्रवाई योग्य योजना जारी करेगा। साथ ही, केंद्र सरकार नए कानूनी प्रावधानों का एक मसौदा भी तैयार करेगी, ताकि किसी भी तरह की गलत सूचना पर अंकुश लगाया जा सके। वास्तव में, दुनिया में महाझूठ की यह समस्या सोशल मीडिया या इंटरनेट की दुनिया में इतनी ज्यादा हावी हो गई है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी जी-20 जैसे मंच पर चिंता का इजहार कर चुके हैं। डीपफेक की शुरूआत हास्य-विनोद के लिए हुई थी, लेकिन अब इसका उपयोग चरित्र-हनन, शोषण और दुष्प्रचार के लिए ज्यादा होने लगा है। किसी की छवि बिगाड़ने का यह

चस्का इसलिए भी चलन में आ गया है कि तकनीकी तौर पर लोग सक्षम हो गए हैं। बहुत से ऐसे सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जिनके जरिये किसी की छवि के साथ खिलवाड़ किया जा सकता है। अत यह अब केवल ग्राफिक्स या कलात्मक कमाल मात्र नहीं है, गंभीर अपराध का भी एक रूप है। मोटे तौर पर जो योजना सामने आ रही है, उसके अनुसार, डीपफेक पर रोक की योजना के चार स्तंभ होंगे। डीपफेक या गहरी गलत सूचना का पता लगाना, इन गहरी गलत सूचनाओं को परिदृश्य से हटाकर या घटाकर खत्म करना, इस अपराध के रिपोर्टिंग-तंत्र को मजबूत करना और जागरूकता फैलाना। यह योजना तारीफ के योग्य है और ये उपाय पहले ही कर लेने चाहिए थे। अगर वर्तमान कानूनों के दायरे में ये अपराध नहीं आ रहे हैं, तो नए कानून की तैयारी प्रशंसनीय है। जब कानून आएगा, तब आएगा, सरकार को अभी स्पष्ट कर देना चाहिए कि डीपफेक के पुराने मामलों की भी पड़ताल होगी और दोषियों को सजा मिलेगी। सरकार की इस घोषणा मात्र से महाझूठ के मामलों में कमी आएगी। दंड की कमी की वजह से ही महाझूठ फैलाने वाले गली-गली में पसरने लगे हैं। खासतौर पर सोशल मीडिया से हो रही कमाई भी इसके लिए जिम्मेदार है। डीपफेक को रोकने के लिए खासतौर पर सोशल मीडिया प्रबंधन करने वाली कंपनियों को भी जवाबदेह बनाना होगा। डीपफेक के खिलाफ बनने वाला नया कानून, जाहिर है, अनेक स्तरों पर परामर्श से गुजरेगा। इसमें किसी भी तरह से सेंध की गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। राजनीतिक स्तर पर भी चरित्र-हनन के लिए महाझूठ गढ़े जाते हैं, अत महाझूठ का सहारा लेने वाले राजनीतिक दलों या संगठनों या कंपनियों को जवाबदेह बनाना जरूरी है। यह अच्छी बात है कि सभी सोशल मीडिया कंपनियां इस बात से सहमत हैं कि डीपफेक की लेबलिंग और वॉटरमार्किंग जरूरी है। इसी साल की शुरूआत में तेलुगु अभिनेत्री रश्मिका मंदाना का एक फर्जी वीडियो वायरल होने के बाद से सरकार गंभीर हुई है, लेकिन इस दिशा में अधिकारियों को पूरी ईमानदारी से काम करना चाहिए। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

कानून बनाम पेच

राज्यपालों और राज्य सरकारों के बीच ताकत की लड़ाई में कई बार अप्रिय स्थिति पैदा हो जाती है। पंजाब, तमिलनाडु और केरल में यही हुआ। वहां के राज्यपालों ने विधानसभा में पारित कानूनों को मंजूरी देने के बजाय लंबे समय तक लटका कर रख लिया। इस पर इन राज्य सरकारों ने सर्वोच्च न्यायालय में गुहार लगाई कि राज्यपाल उन कानूनों पर कोई निर्णय नहीं ले रहे । तब न्यायालय ने मौखिक रूप से कहा था कि राज्यपाल कोई चुने हुए प्रतिनिधि नहीं होते और विधानसभा द्वारा पारित कानूनों को लंबे समय तक लटकाने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। अब पंजाब सरकार की याचिका पर विस्तृत फैसला देते हुए कहा है कि विधानसभा द्वारा पारित कानून वैध हैं। दरअसल, पंजाब सरकार ने विधानसभा का विशेष सत्र बुला कर चार कानून पारित किए थे, जिन्हें मंजूरी के लिए राज्यपाल के पास भेजा गया था। मगर उन्होंने इस तर्क के साथ उन्हें दबा कर रख लिया था कि सरकार द्वारा बुलाया गया विशेष सत्र असंवैधानिक है। सर्वोच्च न्यायालय ने उस सत्र को उचित ठहराया है। इस तरह उसमें पारित कानून स्वतः संवैधानिक साबित हो गए। अब राज्यपाल के पास उन कानूनों पर कार्रवाई करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचा है। विधानसभा द्वारा पारित कानूनों पर मंजूरी देने या न देने संबंधी राज्यपाल के अधिकार सीमित हैं। वे उन कानूनों को विचार के लिए राष्ट्रपति के पास भेज सकते हैं या कानूनी सलाह के लिए कुछ समय तक रोक कर रख सकते हैं। अगर वे उन्हें अस्वीकृत करते हैं और फिर से वही कानून विधानसभा दुबारा पारित कर देती है, तो राज्यपाल के पास उन्हें मंजूर करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं बचता। मगर न केवल पंजाब, बल्कि तमिलनाडु और केरल के राज्यपालों ने भी कानूनों को दबा कर रखे रहने का तरीका अपनाया । तमिलनाडु के मामले में तो पिछली सुनवाई के वक्त सर्वोच्च न्यायालय ने यहां तक पूछ लिया कि राज्यपाल तीन सालों तक क्या कर रहे थे। हालांकि उसके बाद राज्यपाल ने मंजूरी के लिए लंबित पड़े कानूनों को नामंजूर कर दिया था और सरकार ने उन्हें दुबारा पारित कराने की तैयारी कर ली थी। दरअसल, इन तीनों राज्यों ने पारित कानूनों में एक कानून यह भी पारित किया है कि विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति राज्यपाल न होकर मुख्यमंत्री होंगे। यह कानून राज्यपालों को अधिक नागवार गुजरा था। हालांकि इन तीन राज्यों के अलावा राजस्थान और पश्चिम बंगाल सरकार ने भी इसी प्रकृति का कानून तैयार किया था, जिसे लेकर सरकार और राज्यपाल के बीच तनातनी का माहौल बना रहा। तीन राज्य सरकारों के सर्वोच्च न्यायालय में अपने अधिकारों की गुहार के बाद एक बार फिर से यह तथ्य रेखांकित हुआ है कि राज्यपाल राजनीतिक मंशा से काम करेंगे, तो ऐसी टकराव की स्थितियां पैदा होती रहेंगी। छिपी बात नहीं है कि जिन राज्यों में केंद्र के विपक्षी दलों की सरकारें हैं, वहां राज्यपाल और राज्य सरकार के बीच ऐसा तनावपूर्ण माहौल अक्सर बनता रहता है। दिल्ली सरकार के मामले में भी अदालत ने कहा था कि उपराज्यपाल को चुनी हुई सरकार के फैसलों में हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है। उसके बाद केंद्र सरकार ने अध्यादेश जारी कर और फिर कानून बना कर उपराज्यपाल को चुनी हुई सरकार से ऊपर अधिकार प्रदान कर दिया था। पंजाब सरकार बनाम राज्यपाल के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने एक तरह से सभी राज्यपालों को संदेश दिया है कि वे चुने हुए प्रतिनिधि की तरह नहीं, संवैधानिक पदाधिकारी की तरह व्यवहार करें।

बाबा गुरु नानक जयंती पर विशेष

हिंदु-मुस्लिम एकता के प्रतीक : बाबा गुरु नानक

सफर ननकाना से करतारपुर साहिब तक

लोगों की भलाई (सरबत का भला), प्रकृति की उपमा और उसके महत्व का गुणगान, एकेश्ववादं ईश्वर की सर्वोच्चता और जाति विहीन समाज की परिकल्पना। यही जीवन दर्शन और सन्देश है गुरुनानक देव जी का ।विदेशी आक्रांताओं की दासता का दंश झेल रहा भारतीय समाज पहले से ही जाति, वर्ण और धर्मांधता की चार दीवारों में कैद हो दोयम दर्जे का जीवन जी रहा था। लोग अपने स्वाभिमान और अधिकारों प्रति जागृत हो। उनके इसी अज्ञानता के अंधेरे को दूर करने के लिए गुरु नानक, एक गुरु, पीर, लामा या मित्र बन कर उनके द्वार पहुंचे। कुआं पहुंच गया प्यासे के पास। बालक गुरुनानक को पिता कालू मेहता ने बीस रुपए दिए और कहा चूहड़खाने मंडी जाकर सौदा खरीदो और वापिस गांव तलवंडी आकर बेचो, व्यापार करो, मुनाफा कमाओ। गुरुनानक ने रास्ते में आ रहे भूखे-प्यासे सूफी,

संतों को देखा और सोचा कि भूखों को भोजन कराने से अधिक लाभप्रद व सच्चा सौदा और क्या हो सकता है? वही किया जो सोचा था। 20 रु की रसद मंगवाई, लंगर पकाया और साधुओं को खिला दिया। (फोटो लंगर) और इस तरह नींव पड़ी लंगर प्रथा की। गुरु नानक बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा, तीक्ष्ण बुद्धि और जिज्ञासु वृति के धनी थे। ऐसा ही एक वाकया उनके स्वतंत्र चिंतन को उजागर करता है। जब यज्ञोपवीत संस्कार के लिए परिवार के कुल पुरोहित हरदयाल ने उन्हें जनेऊ पहनाना चाहा तो गुरु नानक ने कहा - यदि आपके पास ऐसा जनेऊ है जो दया की कपास से, संतोष के सूत से बना हो, जो न टूटता हो, न मैला होता हो और आगामी जीवन में भी साथ जाता हो, वो मुझे स्वीकार है अन्यथा आपके धागे वाले जनेऊ में मेरी कोई रुचि नहीं। फोटो जनेऊ सुल्तानपुर लोधी के नवाब दौलत खान के मोदीखाने में भंडारी की नौकरी करते हुए गुरु नानक देव जी को समाज के हर गरीब और पिछड़े लोगों की समस्या देखने, समझने और उनकी मदद करने का अवसर मिला। वहां लगभग 12 वर्ष तक नौकरी की। यहीं पर वेई नदी में स्नान करते समय उनका सचखंड में परमात्मा से साक्षात्कार हुआ। उन्हें आदेश हुआ - ''तुम संसार के लोगों को प्रेम और सच्चाई का रास्ता दिखाओ।'' तीन दिन बाद गुरु नानक नदी के बाहर प्रगट हुए और लोगों से कहा- ''न कोई हिन्दू न कोई मुसलमान।'' उनका स्पष्ट सन्देश था कि मनुष्य की पहचान धार्मिक आधार पर नहीं होनी चाहिए। बल्कि उसकी पहचान एक परोपकारी इंसान के रूप में बने यही उसकी भक्ति है। उन्होंने घर छोड़ने का निश्चय किया अब संसार हीं उनका घर था। प्रकृति प्रति गुरु नानक का अथाह प्रेम और समर्पण भाव उनके द्वारा उचारे शब्द से प्रगट होता है - ''पवन गुरु, पाणी पिता माता धरत महत।'' यही तत्व सृष्टि के मूल तत्व हैं। पर्यावरण और जीवन की धूरी हैं -''पवन, पानी और धरती'' जिसे गुरु नानक ने गुरु, पिता और माता का दर्जा दिया है। बगदाद की यात्रा के समय गुरु नानक अपने साथी मरदाना के साथ भजन गा रहे थे तो वहां के काजी दस्तगीर ने गुरु नानक देव जी को भजन गाने से माना किया और कहा कि गाने बजाने का काम तो मिरासी और वैश्याएं करती है। फकीर

लंगर

काबा की ओर पैर कर सोते हुवे

प्रभु की उस्तुति में गीत गाते हुवे

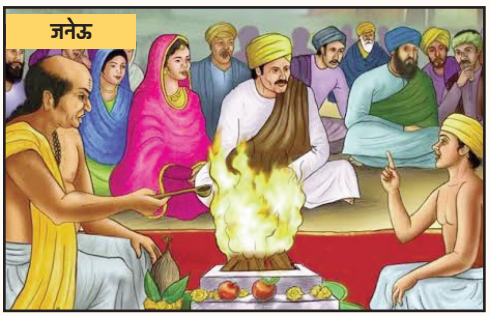
जनेऊ

को गाने की क्या आवश्यकता? गुरु नानक बोले - काजी जी, केवल स्त्री- पुरुष हीं नहीं गाते, चिड़ियां, पेड़, नदियां, झरने, हवा, पानी सब गाते हैं सबमें अनहद संगीत सुनाई देता है। मक्का मदीना में सामूहिक नमाज में भाग लेने के बाद गुरु नानक खुले मैदान में काबा की ओर पैर रख कर सो गए। किसी ने ठोकर मार के उठाया - ''तुम काबा की ओर पैर कर क्यों सो रहे हो उधर तो खुदा का घर है।'' गुरु नानक बड़ी विनम्रता से बोले - ''मेरे पैर उधर कर दो जिधर खुदा का वास न हो।'' गुरु नानक यही सन्देश देना चाहते थे कि खुदा सर्वत्र है, प्रकृति के जर्रे जर्रे में है, पूरी कायनात में है। ब्रह्मदेव और कमालुद्दीन दो विद्वानों से गुरु जी मिले । दोनों को अपने शास्त्रज्ञ और विद्वान होने का बड़ा गर्व था। इतना ज्ञान होने के बावजूद उनके मन में शांति नहीं थी यही उनकी चिंता का सबब था। गुरु नानक देव जी ने उन्हें समझाया कि यदि व्यक्ति में करुणा और विनम्रता नहीं है तो ज्ञान भी अहंकार में तब्दील हो जाता है। दोनों को संबोधित करते हुए कहा - ''आपके मस्तिष्क तो भरे हुए हैं परन्तु हृदय खाली हैं।'' पर्वत की कंदराओं में अपना घर-संसार छोड़ कर आने वाले

साधु और योगियों से कहा- ''सभी धार्मिक अगु, साधुजन संसार त्याग कर पर्वतवासी बन जाएंगे तो समाज के भटके लोगों को सही राह कौन सुझाएगा, उनका मार्गदर्शन कौन करेगा ? पीलीभीत अल्मोड़ा में तपस्या कर रहे योगियों से कहा- बैरागी बनने, आवश्यक इन्द्रियां विग्रह करने, शरीर पर भस्म लगाने और मुंड मुंडवाना योग नहीं। माया के बीच रहते हुए भी निरंजन से जुड़ कर रहा जाए यही योग की वास्तविक युक्ति है। महिला की दयनीय स्थिति देख कर गुरु नानक देव जी ने कहा - ''सो किऊ मंदा आखीऐ जितु जमहे राजान...।'' राजा महाराजाओं की जननी को निम्न या बुरा क्यों कहा जाए । गुरु नानक देव जी क्रांतिकारी समाज का सृजन करना चाहते थे। उनका मानना था प्रेम के मार्ग पर चलना आसान नहीं, जटिल परीक्षाओं से भरा होता है -

ज्यो तउ प्रेम खेलन का चाउ
सिर धर तली गली मेरी आउ
इत मारग पैर धरीजे
सिर दीजे कान न कीजे।

गुरु नानक देव जी ने देश-विदेश की हजारों' की धार्मिक यात्राएं (उदासियां) की, जिसमें लगभग 24 वर्ष व्यतीत हुए! वापसी आकर एक रमणीक स्थान की शांति देख प्रभावित हुए और खेती के लिए जमीन खरीदकर उसमें मकान बनाया। परिवार के सदस्यों को भी बुला लिया। कृषक के रूप में खेती करना प्रारंभ किया। अपने जीवन काल में जो उपदेश लोगों को दिए उन्हें आचरण में ढालने समय आ गया था। सभी संदेशों को उन्हें एक पोथी में लिखना शुरू किया। कथनी और करनी में भेद मिटा दिया। दिन भर परिश्रम करते, खेतों में हल जोतते और शाम को संगत के साथ मिलकर कीर्तन करते। अपने हाथों से लंगर बना कर संगत में बांटते। यह क्रम 18 वर्ष तक चला। संगत को एक संदेश दिया - ''किरत करो, नाम जपो और वंड छको'' यही सन्देश गुरु जी के जीवन का निचोड़ था। इस स्थान पर गुरुनानक रम गए । उसका अपने हाथों से नाम करन किया 'करतारपुर' यानी प्रभु का घर। इसी स्थान पर 1539 ईसवी में हिंदु - मुस्लिम एकता का मसीहा बाबा गुरु नानक परम ज्योति में विलीन हो गए।

ओंकार सिंह,
अध्यक्ष, के बी जी बी संस्था
Email : singhonkar1957@gmail.com
Mob : 9982222606

विद्यासागर पाठशाला के बच्चों को पूजा सिखायी एवं प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित किये

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी दुर्गापुरा जयपुर में श्री दिगम्बर जैनाचार्य विद्या सागर पाठशाला दुर्गापुरा जयपुर के बच्चों को रविवार दिनांक 26 नवम्बर 2023 को पंडित रितिक जैन शास्त्री एवं पंडित दीपक जैन शास्त्री ने पूजा करना सिखाया। भगवान महावीर स्वामी जी के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के अवसर पर दीपक सजाओ प्रतियोगित के विजेताओं में सक्षम व मानवी प्रथम, सान्वी व विहान द्वितीय एवं अहाना, आरव, अनिका, याना, औरा व अविका जैन को सांत्वना पुरस्कार वितरित किए। कार्यक्रम में ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़, मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला, कोषाध्यक्ष विमल कुमार गंगवाल, कैलाश चन्द जैन छाबड़ा, राहुल जैन पाटोदी, संयोजक श्रीमती चंदा सेठी, सहयोगी, श्रीमती छवि जैन, एवं अविभावक उपस्थित थे। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़, मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला एवं समस्त कार्य कारिणी ने कार्यक्रम में उपस्थित हुए नन्हे मुन्ने बच्चों का उत्साह वर्धन करते हुए आयोजकों का हार्दिक धन्यवाद् एवं आभार व्यक्त किया। अंत में सभी को अल्पाहार वितरित किया गया।

जैन मंदिर में हुआ श्रीपाल मैना सुंदरी नाटक

अम्बाह. शाबाश इंडिया। अष्टानिका पर्व के अवसर पर जैन समाज की महिलाओं द्वारा नाटक मंचन कर धमार्नुसार श्री सिद्धचक्रमहामंडल विधान के महत्व को नाटकीय स्वरूप दिया गया। जिसे उपस्थित भक्तों ने सराहा। श्रीमती नीलम जैन झाबुआ के मार्गदर्शन में महिलाओं द्वारा भजन ''फल पायो मैना रानी'' का गुणगान किया गया। नाटक में बताया गया कि बेटी की मर्जी पूछे बिना राजा पहुपाल ने अपनी बेटी मैना सुंदरी की शादी श्रीपाल नाम के

एक ऐसे व्यक्ति से तय की जिसे कोढ़ की बीमारी थी। मैना सुंदरी की माता निर्गुनमति व राज्य के कई लोगों के लाख मना करने के बाद भी बेटी ने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए श्रीपाल से ब्याह रचाया। दोनों ने दिगंबर जैन मंदिर में मुनि महाराज के दर्शन किए, जहां मुनि महाराज ने उन्हें श्री सिद्धचक्रमहामंडल विधान का आठ दिवसीय पूजन कर यंत्र पर अभिषेक किए गए जल गंधोदक को अपने शरीर पर छींटे लगाने को कहा। मैना सुंदरी ने भक्ति भाव से कोढ़ की बीमारी से पीड़ित अपने पति को वह गंधोदक लगाया जिसके परिणाम स्वरूप राजा श्रीपाल कोढ़ की बीमारी से मुक्त हो गया। राजा श्रीपाल ने पूर्व भव में कोढ़ की बीमारी से पीड़ित एक दिगंबर जैन मुनि की अपने सहभागियों के साथ निंदा की थी। जिसके फलस्वरूप उसे व सहभागियों को भी कोढ़ की बीमारी हो गई थी। बीमारी से मुक्ति के बाद राजा श्रीपाल ने कभी किसी की निंदा नहीं करने का वचन लिया। वही कार्यक्रम में प्रमुख रूप से नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती अंजलि जैन मौजूद थीं जिन्होंने धर्म के महत्व को समझाया और कहा कि धर्म का पालन करने से जीवन में बड़े से बड़े संकट टल जाते है।

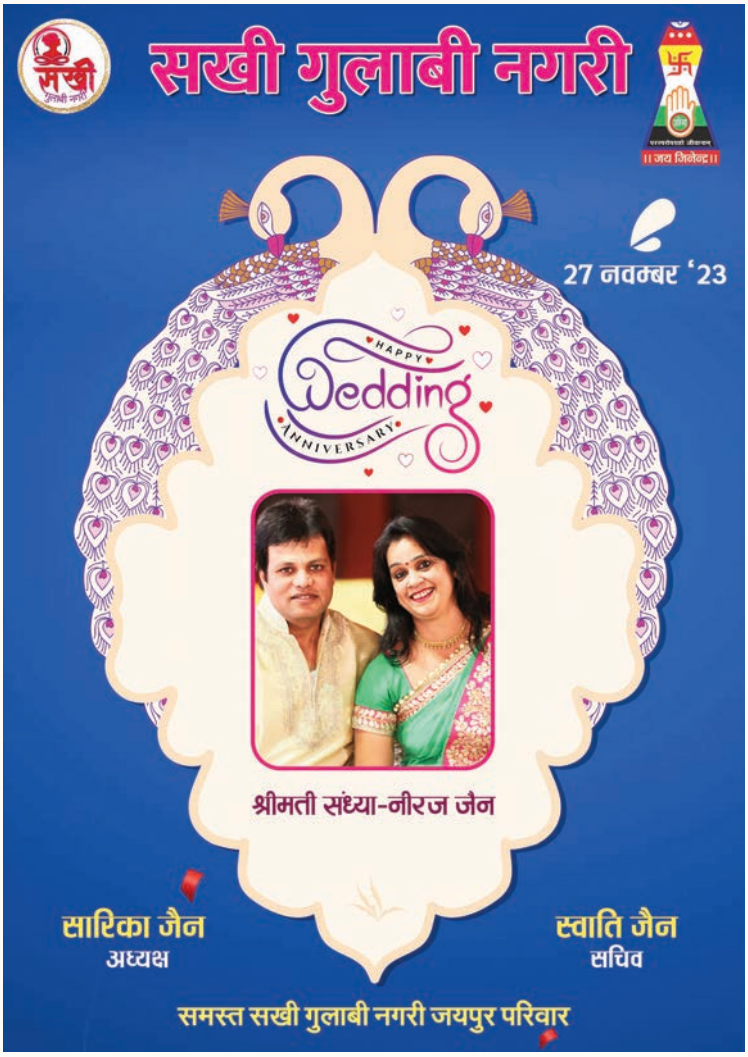

सेंट्रल बैंक के रिटायर्ड अधिकारियों का दिवाली स्नेह मिलन समारोह आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया

सेंट्रल बैंक रिटायर्ड ऑफि सर्स एसोसिएशन (सी बी आर ओ ए) राजस्थान के सदस्यो का दिवाली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन टैगोर नगर अजमेर रोड के एक रेस्टोरेंट में रविवार को आयोजित किया गया । संस्था के संयुक्त महासचिव बी एस राठौड़ ने बताया की सभा स्वागत संबोधन के साथ शुरू हुई तथा चेयरमैन आर के बख्शी व उपाध्यक्ष पी आर शर्मा ने सभी को दीपावली की शुभ कामनाए दी। सभा में नये सदस्यों हर लाल मीना , हर चंद मीना, पी ए गौड़, व बी एल खन्ना का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया। इसके साथ ही धर्म क्षेत्र मे समाज हित के महत्ती सेवा कार्यों के लिए संस्था के क्षेत्रीय सचिव पदम जैन बिलाला का तथा सामाजिक क्षेत्र में सेवा कार्यों के लिए विनोद सिंहल का संस्था के पदाधिकारियों आर के जैन, शिवानंद शर्मा, भँवर सिंह राठौड़, सीता राम यादव, मनोज शर्मा आदि द्वारा शाल व माला पहना कर सम्मान किया गया। सभा को मुख्य वक्ता केंद्रीय महासचिव एन के परीक ने संबोधित करते हुए बैंकिंग क्षेत्र की वर्तमान गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए 2002 के बाद के सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए हुए डी ए संबंधी तथा बीमा योजना में आंशिक सहायता आदि के बारे में बताया साथ ही पेंशन अपडेशन के मुद्दे पर प्रगति विस्तार से समझायी। सदस्यों की जिज्ञासाओं को भी परीक ने सुनकर यथोचित जवाब दिये। सभा में जयपुर सहित राजस्थान के अन्य स्थानों से आये सदस्यों ने भाग लिया। सभा का संचालन सुरेश शर्मा ने किया तथा समापन कोषाध्यक्ष ललित शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन तथा वात्सल्य लंच के साथ हुआ।

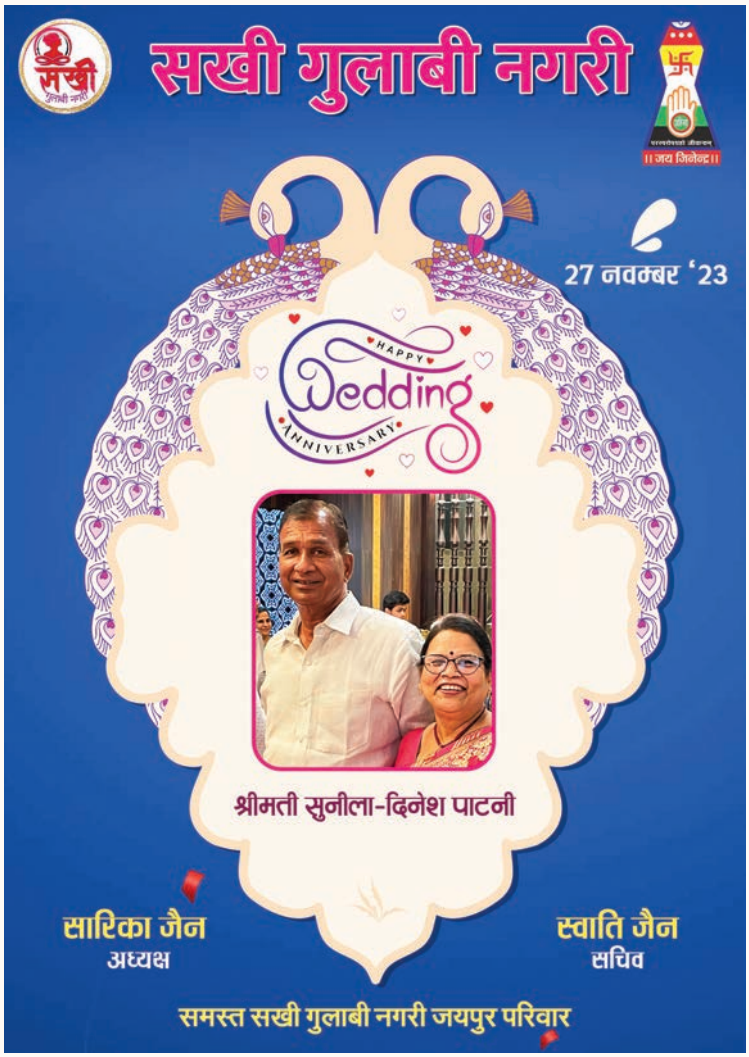

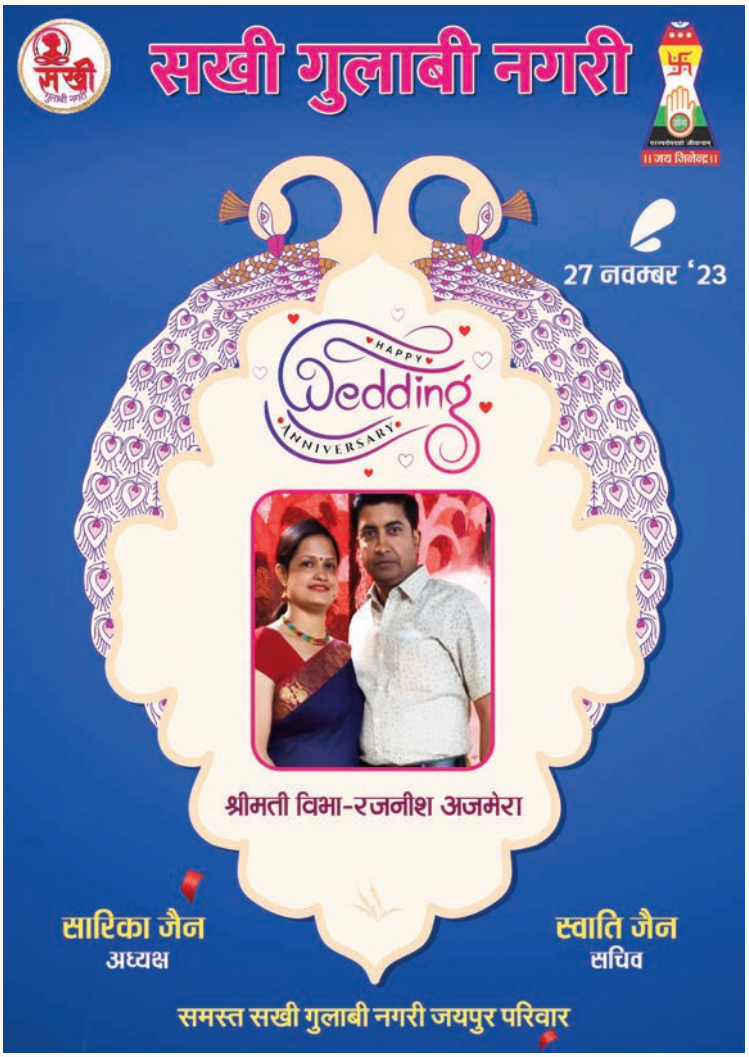

अब गांव-गांव में जगेगी विज्ञान और शोध की अलख

विजय गर्ग

स्कूली बच्चों में शोध और नवाचार के प्रति रुझान बढ़ाने सहित इसके फायदे को गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने एक राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरूआत की है। इसके तहत देशभर के प्रत्येक ब्लाक में एक राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। जो नवंबर के अंतिम हफ्ते से जनवरी 2024 के पहले हफ्ते के बीच कभी भी आयोजित किया जा सकेगा। इस आविष्कार सप्ताह का विषय खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान करना है, जो आम जनजीवन से जुड़ा है, जिसे स्कूली छात्र शिक्षक की मदद से आसानी से कर सकेंगे। शिक्षा मंत्रालय ने इसे लेकर एक गाइडलाइन भी जारी की। जिसमें प्रत्येक ब्लाक से करीब चार से पांच स्कूलों को इसके लिए चयनित किया जाएगा। इसमें पीएम- श्री स्कूल अनिवार्य रूप से शामिल होंगे। इन स्कूलों में आविष्कार सप्ताह के दौरान विज्ञान, शोध और नवाचार में रुचि रखने के लिए पूरे ब्लाक के स्कूलों के बच्चे हिस्सा लेंगे। जहां वह पहले से तय विषय को वैज्ञानिक कसौटी पर परखेंगे। मंत्रालय ने राज्यों को इस संबंध में लिखे पत्र में कहा है कि वह तय अवधि के दौरान अपनी सुविधा के मुताबिक किसी भी सप्ताह इसका आयोजन कर सकेंगे। इस बीच, आविष्कार सप्ताह के आयोजन के लिए चयनित होने वाले प्रत्येक स्कूलों को तीन से चार हजार रुपये की वित्तीय सहायता भी दी जाएगी। इनमें ग्रामीण क्षेत्रों से ज्यादा से ज्यादा बच्चों को शामिल किया जाएगा। मंत्रालय से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक, इस आयोजन का लाभ जहां एक और स्कूली बच्चों को मिलेगा। उनका विज्ञान और शोध के प्रति रुझान बढ़ेगा। वहीं इन शोधों और परीक्षण का विषय आम लोगों होने के चलते इसका लाभ गांव से जुड़ा गांव तक पहुंचेगा। वैसे भी शहरी क्षेत्रों में खाद्य पदार्थों में मिलावट पर अंकुश लगने के बाद से इन कारोबार में लगे लोग ग्रामीण क्षेत्रों की ओर से शिफ्ट हो गए हैं। जो लोगों में मिलावटी के खिलाफ जागरूकता में कमी का लाभ उठाकर लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ कर रहे है। ऐसे में जब स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को इसके लिए जागरूक कर दिया जाएगा, तो वह लोगों को इसके प्रति सतर्क कर सकेंगे।

विजय गर्ग:
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट

नवजात बालक की भोजन थैली फटी, सफल ऑपरेशन कर दिया जीवन दान

कोटा. कासं। कोटा छावनी निवासी एक बालक के जन्म के चार दिन बाद अचानक सांस लेने में तकलीफ होने लगी तो परिवार ने बालक को शिशु रोग विशेषज्ञ डा पवन को दिखाया और उन्होंने उसे तुरंत नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई में भर्ती होने की सलाह दी और वरिष्ठ शिशु शल्य चिकित्सक डा समीर मेहता की सलाह ली । डा समीर ने एक्सरे जाँच में पाया कि पेट में आँत फटी हुई है व तुरंत ऑपरेशन की सलाह दी। डा समीर ने ऑपरेशन में पाया कि बालक की भोजन थैली चार सेंटीमीटर लंबी फटी हुई है व काफी गली हुई है। ऑपरेशन में निश्चेत्ना का कार्य डा अनिल गर्ग ने सम्भाला। भोजन थैली को रिपेयर कर बालक को नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई में आठ दिन रखा व उसके बाद माँ का दूध पिलाना शुरू किया गया। डा मेहता ने बताया कि यह रोग काफी दुर्लभ है और इसका कोई स्पष्ट कारण भी लिटरेचर में नहीं बताया गया है। डा समीर ने पिछले 23 वर्षों में भोजन थैली के फटने का पहला मामला देखा है।

गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने कहा...

सकारात्मक सोच भविष्य की दिशा में काम

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी के तत्वावधान में गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में गुरु माँ के मुखारविंद से शांतिधारा करने का सौभाग्य कपूरचंद जी इंदौर, शैलेन्द्र पाटनी निवाई वालों ने प्राप्त किया। शांतिनाथ भगवान के पादमूल में श्री शांतिनाथ मंडल विधान रचाने का अवसर सतीशचन्द्र प्रोफेसर लालकोठी जयपुर वालों ने प्राप्त किया। बड़े भक्तिभावों से मंडल पर 120 अर्घ्य समर्पित किये गये। पूज्य माताजी ने सभी को सकरात्मक विचार बनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि पॉजिटिव थिंकिंग का हिंदी अर्थ सकारात्मक सोच होता है जिसका मतलब अच्छी सोच या हमेशा सही सोचना होता है। यदि कोई व्यक्ति सकारात्मक सोच रखता है तो वह कठिन समय में भी अच्छा ही सोचता है। सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करना। एक व्यक्ति जो सकारात्मक तरीके से सोचता है, वह अपने आसपास के लोगों और घटनाओं के उज्ज्वल पक्ष पर ही ध्यान केंद्रित करता है। इसके साथ ही वे अपनी तमाम इच्छाओं को वश में कर अपनी नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदल देता है। यह है कि अपने सोचने के तरीके को बदलकर आप अपनी भावनाओं और अपने कार्यों को नियंत्रित कर सकते हैं।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com